Reported decision not to set up a fertilizer factory at Sawai Madhopur

डा. अबरार अहमद खान (राजस्थान) : उपसभाध्यक्ष महोदय, समाचार पत्रों में कहा गया है कि सवाई माधोपुर जिले में देवपुर गांव के पास लगभग गत दो वर्षों से 750 करोड़ रुपये की लागत का गैस पर आधारित खाद के कारखाने का कार्य चल रहा था जिस पर लगभग 10 करोड़ रुपया अब तक खर्च हो चुका था। अभी अचानक पर्यावरण व राजनैतिक कारणों से वहां से स्थान बदलने का निर्णय लिया गया है जिससे सवाई माधोपुर की जनता को भारी आघात पहुंचा है। यह सवाई माधोपुर के लिये पहली बार नहीं है। दो बार इसके पूर्व भी वहां ऐसा हो चुका है।

सवाई माधोपुर की प्राकृतिक और भौगोलिक स्थिति देखते हुए वहां जन शक्ति व प्राकृतिक साधानों, भूमि व जल की अच्छी मात्रा देखते हुए तथा छोटी बड़ी रेलवे लाइनों का संगम स्थान होने के कारण वहां तेल शोधक कारखाना लगाने का निर्णय हुआ था तथा उसका भी सर्वे तथा प्रारम्भिक कार्य प्रारम्भ हो गया था जिसे अचानक यहां से हटाकर मथुरा में लगा दिया। उसके बाद बाम्बे गैस पर आधारित बिजली घर यहां लगाने की बात राजस्थान के पूर्व मुख्य मंत्री श्री जोशी के समय तय हो गई थी। लेकिन अब यह बिजली घर भी कोटा जिले के अन्ता नामक स्थान पर लगाया जा रहा है। इस प्रकार से सवाई माधोपुर के साथ खिलवाड़ होता रहा है। इस कारखाने को लगाने का पूर्व निर्धारित स्थान रणथम्भौर बाघ उद्यान से 22 किलोमीटर दूर था जब कि पर्यावरण विभाग वाले यह कहते हैं कि बाघों के पर्यावरण के दृष्टिकोण से रणथम्भौर बाघ उद्यान से कारखाने के स्थान की दूरी 30 किलोमीटर होनी चाहिए तथा इस आधार पर इसका स्थान बदला जा रहा है, तो इस संबंध में मैं यह कहना चाहूंगा कि जो दूरी नापी जा रही है यह सवाई माधोपुर रेलवे स्टेशन से नापी जा रही है जबकि यह दूरी रणथम्भौर दुर्ग से नापी जानी चाहिये और यदि यह संभव न हो तो सात आठ किलोमीटर कारखाने के स्थान को आगे सरकाया जा सकता है क्योंकि वहां पर पर्याप्त स्थान है तथा इसके अलावा भी हाल में सर्वे करके सवाई माधोपुर जिला प्रशासन ने तीन स्थानों का प्रस्ताव रखा है। एक पूर्व निर्धारित स्थान के पास ही बरबाड़ा ग्राम के पास है जो सबसे उपयुक्त है। दूसरा बैली स्थान के पास है, तीसरा हिन्डौन नामक स्थान के पास है। अत : मैं आग्रह करना चाहता हूं कि सवाई माधोपुर जिले में इस कारखाने को रखा जाये क्योंकि सवाई माधोपुर जिले के साथ जब जब भी इस प्रकार के कारखाने लगाने का प्रस्ताव रखा गया है तो बाद में उसको हटा दिया गया है। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि अगर आयन्दा यहां के लिए किसी उद्योग की घोषणा की गई तो सवाई माधोपुर की जनता विश्वास भी नही करेगी। यह कारखाना यदि उस स्थान पर नहीं हो सके तो उस स्थान से 5–7 किलोमीटर कम करके वहीं पर लगाया जाय।

Late printing of telephone directory in U.P.

DR. MOHD. HASHIM KIDWAI (Uttar Pradesh): Mr. Vice-Chairman, I rise to draw the attention of the Government to an urgent matter of public importance. This pertains to the slowness in the publication of the up-to-date or new edition of the telephone directory in U.P. and its very late delivery to the subscribers.

The Telecommunication Department is supposed to be among the fastest moving departments, but unfortunately the U.P. Telecommunicaion department does not belong to this category. It still clings to the very old, slow moving departments. For instance, in Lucknow the latest telephone directory published and supplied to the telephone subscribers is only up to December, 1986, while the telephone directory of Aligarh is only up to June, 1986, and the subscribers are waiting for the up-to-date edition or the latest supplement to the telephone directory. What is the use of such telephone directories which are so much out of date?